सम्पादक की कलम से

दिल्ली के मुख्य सचिव अंशु प्रकाश पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की मौजूदगी में हुए हमले ने सभी को सकते में डाल दिया। आजादी के बाद देश के इतिहास में इस तरह की यह पहली घटना है। आधी रात को मुख्य सचिव को बैठक के लिए मुख्यमंत्री के घर बुलाया जाए और अपनी बात मनवाने के लिए दो विधायक उन पर हमला कर दें ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। केजरीवाल के आवास पर बुलाई गई बैठक में दिल्ली के मुख्य सचिव के साथ जो हुआ उसकी जितनी निंदा की जाए कम है।

अपने साथ हुई मारपीट की घटना के बाद डरे-सहमे मुख्य सचिव ने जब अपनी आपबीती सुनाई तो हर कोई दंग रह गया...लेकिन आम आदमी पार्टी ने अपने विधायकों पर कार्रवाई करने की बजाए...पूरी घटना को बीजेपी की साजिश करार दे दिया। याद कीजिए जब केजरीवाल को दिल्ली में प्रचार के दौरान एक ऑटो चालक ने थप्पड़ जड़ा था तो वो सीधे राजघाट पर जाकर धरने पर बैठ गए थे ...लेकिन जब उनकी मौजूदगी में मुख्य सचिव पर हमला हुआ तो उन्होंने मौन धारण कर लिया। वैसे मुख्य सचिव पर हमला करने वाले आम आदमी पार्टी के दो विधायकों की गिरफ्तारी तो हो गई लेकिन सवाल उठता है कि आखिर आम आदमी पार्टी को हो क्या गया है?

मेडिकल रिपोर्ट में चोट की पुष्टि होने के बाद ये साफ हो गया कि मुख्य सचिव के साथ मारपीट की गई...लेकिन फिर भी आम आदमी पार्टी अपनी गलती मानने को तैयार नहीं। केंद्र सरकार और उसके अफसरों से आम आदमी पार्टी की टकराव की खबरें तो हमेशा आती रहती हैं...लेकिन नौबत हाथापाई तक पहुंच जाएगी ये किसी ने नहीं सोचा था।

किसी इंसान को पढ़ना कितना मुश्किल होता है इसका सबसे बड़ा उदाहरण दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल हैं। याद कीजिए... दिल्ली का रामलीला मैदान, अन्ना का अनशन और मंच पर केजरीवाल का भाषण...केजरीवाल ने लोगों को क्या-क्या सपने नहीं दिखाए...भ्रष्टाचार मिटाने की बात कही, पारदर्शिता की बात कही, सिस्टम बदल देने की बात कही...लेकिन राजनीति में कदम रखते ही वो अपने सारे आदर्श भूल गए। अब तो अन्ना हजारे भी मानते हैं कि केजरीवाल को पहचानने में उनसे भूल हो गई। अन्ना ने कहा कि अगर आंदोलन के दौरान उन्होंने केजरीवाल से हलफनामा ले लिया होता तो वो मुख्यमंत्री नहीं बन पाते। अन्ना को तो अपनी गलती का अहसास हो गया लेकिन क्या केजरीवाल पर इसका कोई असर होगा?

मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते वक्त केजरीवाल का कहा एक-एक शब्द दिल्ली की जनता को आज भी याद है... लेकिन अफसोस केजरीवाल सब कुछ भूल गए। ये जानते हुए भी कि दिल्ली में सरकार चलाने के लिए उन्हें हर कदम पर केंद्र से तालमेल बिठाकर चलना होगा...वो हमेशा टकराव का रास्ता चुनते रहे। जब-जब आम आदमी पार्टी के विधायक और नेताओं पर संगीन आरोप लगे केजरीवाल चुप रहे, आंदोलन के दौरान बीजेपी और कांग्रेस नेताओं को भ्रष्ट बताने वाले केजरीवाल को कभी अपने नेताओं में खोट नजर नहीं आई। खिड़की एक्सटेंशन में सोमनाथ भारती कांड को लेकर इतना बवाल हुआ लेकिन केजरीवाल अपने मंत्री का बचाव करते दिखे। केजरीवाल के मंत्री जितेंद्र तोमर और दूसरे विधायक फर्जी डिग्री मामले में फंसे, गिरफ्तारी हुई लेकिन केजरीवाल चुप रहे। जब विवाद बढ़ा तो उनके सिपाहियों ने कभी एलजी पर दोष मढ़ा, तो कभी केंद्र की मोदी सरकार पर।

जब पार्टी के अंदर प्रशांत भूषण और योगेंद्र यादव जैसे नेताओं ने केजरीवाल को तानाशाह करार दिया तो उन्हें एक झटके में पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। पार्टी में केजरीवाल के खिलाफ बोलने की सजा हर नेता को मिली...यहां तक कि उन्होंने अपने मंत्री कपिल मिश्रा को भी नहीं बख्शा। दिल्ली की जनता आम आदमी पार्टी के अंदर रोज-रोज का झगड़ा चुपचाप देखती रही। आम आदमी पार्टी के नेता हर दूसरे दिन विवादों में फंसते रहे लेकिन केजरीवाल पर इसका कोई फर्क नहीं पड़ा। जब लाभ का पद मामले में आम आदमी पार्टी के 20 विधायकों को एक झटके में अयोग्य करार दे दिया गया तो केजरीवाल और उनके सिपाहियों ने चुनाव आयोग को ही कठघरे में खड़ा कर दिया।

बात-बात पर बीजेपी और कांग्रेस नेताओं के खिलाफ आरोपों का चिट्ठा लेकर बैठने वाले केजरीवाल को अपने विधायकों में कभी कोई दोष नजर नहीं आया। केजरीवाल जी दिल्ली की जनता ने आपको बड़ी उम्मीदों से सत्ता सौंपी थी। आप दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं...दिल्ली के लोगों का भला तभी होगा जब आप केंद्र के साथ बेहतर रिश्ते रखेंगे?

अस्मां जहांगीर के कारण ही पाकिस्तान में मानवाधिकार मुद्दा बन पाया

अस्मां जहांगीर, जो पिछले सप्ताह गुजर गईं, एक लोकप्रिय मानवाधिकार वकील और सामाजिक कार्यकर्ता थीं। वैसे उसका काम पाकिस्तान तक सीमित था, पर पूरे उपमहाद्वीप में उसकी मिसाल दी जाती थी। उसने व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा के लिए ह्यूमन राइट्स कमीशन स्थापित करने की घोषणा जिस जगह से की थी वह भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध सुधारने के लिए बैठक करने की जगह भी बन गई थी।

अस्मां भारत और पाकिस्तान के लड़के-लड़कियों को उस आवास पर जमा करती थीं जो संसद के सदस्य के रूप मुझे मिला हुआ था। मैं देखता था कि अस्मां समाज पर धर्म के असर को बदलने के लिए पूरी कोशिश करती थीं। धर्म में राजनीति मिलाना ही समस्याओं के विनाश की वजह थी। कुछ दिनों पहले ही उसने मुझे लाहौर से टेलीफोन कर बताया था कि बेटी की शादी कर देने के बाद अब उसके पास भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध सुधारने के लिए काम करने के लिए ज्यादा समय रहेगा। शायद यह उसके कहने का तरीका था कि एक धर्म की ओर झुके समाज को बदलने के लिए उसे अभी मीलों जाना है।

अस्मां को इस बात का संतोष हो सकता है कि वह भारत और पाकिस्तान को सहमति की ओर लायी थी, भले ही नजदीक आने में उनकी हिचकिचाहट साफ दिखाई देती हो। अस्मां ने नई दिल्ली और इस्लामाबाद को यह महसूस कराया कि आमने-सामने बैठकर इस पर चर्चा का कोई विकल्प नहीं है कि वे अपना झगड़े क्यों नहीं खत्म कर सकते। वैसे नई दिल्ली ने तय कर लिया था कि पाकिस्तान जब तक आर्तकियों को शरण देना बंद नहीं करता तब तक कोई बातचीत नहीं होगी, अस्मां का मानना था कि सुलह की अब भी कुछ गुंजाइश थी।

लेकिन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज इस बारे में स्पष्ट थीं कि आतंक और बातचीत साथ-साथ संभव नहीं हैं, जब तक भारत को यह महसूस नहीं होता कि पाकिस्तान इस मुद्दे पर गंभीर है, नई दिल्ली इस्लामाबाद से बातचीत नहीं करेगी। अस्मां महसूस करती थीं कि कोई सार्थक बैठक करने के पहले पाकिस्तान की सेना के साथ कुछ समस्याएं हैं जिन्हें दूर करना पड़ेगा। वह ऐसी बैठक को लेकर काफी सकारात्मक थीं और किसी तरह सत्ताधारियों को इसके औचित्य को समझने के लिए राजी कर सकती थीं लेकिन मुझे निराशा है कि अस्मां की मौत पर भारत में बहुत कम प्रतिक्रिया हुई जबकि उसने भारत से दुश्मनी की कसम खाई पाकिस्तान की सेना को चुनौती दी थी। भारत और पाकिस्तान के संबंध बेहतर बनाने को लेकर उसका समर्पण उत्साहवर्धक था। मैंने सदैव उसकी कोशिशों को समर्थन दिया।

राज्यसभा के सदस्य के रूप में मुझे लोदी इस्टेट में एक आवास दिया गया था जहां वह पाकिस्तान के लड़के-लड़कियों को हिंदुस्तान के लड़के-लड़कियों से मिलाने के लिए लाती थी। उसने उस जगह का नाम पाकिस्तान हाउस रख दिया था। भारत के लड़के-लड़कियों से विदा लेते वक्त पाकिस्तान के बच्चे-बच्ची आंसू बहाते थे। वह एक खास धर्म की ओर झुकते समाज से सीख लेने के लिए भारत के युवाओं को भी पाकिस्तान ले जाती थीं।

पाकिस्तान के मानवाधिकार और प्रतिरोध की प्रतीक अस्मां चार दशकों से ज्यादा समय से सैनिक तानाशाहों की प्रबल विरोधी थीं। वह भारत-पाकिस्तान शांति की भी प्रबल समर्थक थीं और भारत के साथ बातचीत के लिए कई अनौपचारिक प्रतिनिधमंडल का हिस्सा थीं। इतना ही नहीं, जब उसने न्यायपालिका में बतौर एक वकील काम करना शुरू किया तो उसका एक उल्लेखनीय कैरियर रहा। इससे उसकी लोकप्रियता का संकेत मिलता है कि वह पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन की प्रमुख थीं। अभी भी, पाकिस्तान की न्यायपालिका उसे इसके लिए याद करती है जब वह इफ्तिखार चौधरी, जो पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश थे, के सम्मान को वापस लाने के लिए लड़ी थीं। वकीलों के आंदोलन ने अंत में अपना लक्ष्य हासिल किया और यह राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के पतन का कारण भी बना। उस अभूतपूर्व आंदोलन ने इस बात की उम्मीद बंधाई कि पाकिस्तान लोकतंत्र के महत्व और उसकी बहाली के महत्व को सचमुच समझ रहा है। लेकिन फिर, पाकिस्तान में हर शासक का ध्यान इसी पर रहता है कि सेना उसके साथ क्या करेगी और अभी के लिए भी यही सच है।

मुझे याद है अस्सी के दशक में अस्मां का मार्शल लॉ प्रशासक जनरल जिया उल हक से टक्कर लेना जब वह पाकिस्तान में लोकतंत्र की बहाली के आंदोलन में भिड़ी थीं। विरोध के आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए उसे जेल में बंद कर दिया गया, लेकिन इसके शीघ्र बाद वह एक पहले दर्जे की आंदोलनकारी बन गई। कई बार उसकी उपलब्धियां नीलाम होने को थीं, लेकिन अडिग होकर उसने इन खतरों का सामना किया और तानाशाहों के खिलाफ खड़ी रही। इस प्रक्रिया में, उसने पाकिस्तान मानवाधिकार आयोग की स्थापना करने में मदद की और बाद में इसका अध्यक्ष भी बनी। वह अक्सर कहा करती थी कि अल्पसंख्यकों की रक्षा करना आयोग का कर्तव्य है। उसकी सदारत में आयोग ने ईश्वर-निंदा के साथ-साथ परिवार के कथित सम्मान के लिए की जाने वाली हत्याओं के आरोपों को सफलतापूर्वक रोका।

अस्मां ने अपने देश में महिलाओं के अधिकारों के आंदोलन की अगुआई भी उस समय की जब पाकिस्तान में मानवाधिकार को मुद्दा ही नहीं समझा जाता था। अस्मां के कारण आज लोग, खासकर औरतें, अपने अधिकारों की बात करती हैं और धार्मिक पार्टियों समेत राजनीतिक पार्टियां भी औरतों के अधिकारों के महत्व को महसूस करती हैं। इसका श्रेय अस्मां को जाता है। एक खास मुद्दे को, जिसे अस्मां ने उठाया था वह ईसाइयों पर ईश्वर-निंदा के आरोपों का था। अल्पसंख्यक समुदाय के बहुत सारे लोगों को मौत की सजा का सामना करना पड़ता था क्योंकि ईश्वर-निंदा के अपराध के लिए कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान है। वह लापता लोगों को ढूंढ निकालने के मुकदमों को भी मुफ्त में लड़ती थी। एक दयालु हृदय वाली अस्मां कट्टरपंथियों की धमकियों समेत किसी तरह के दबाव के सामने नहीं झुकती थी।

पूरी दुनिया में लोकप्रिय, आंदोलनकारी अस्मां को रमन मैगासेसे और यूनाइटेड नेशंस ह्यूमन डेवेलपमेंट फंड पुरस्कार के अलावा कई पुरस्कार मिले थे। लेकिन अस्मां के लिए पुरस्कारों का कोई मतलब नहीं था क्योंकि उसका एक ही उद्देश्य था अपने देश में लोकतंत्र की बहाली करना जिसमें उसकी अडिग आस्था थी। इसी तरह अस्मां ने सिर्फ पाकिस्तान के लोगों के लिए ही नहीं बल्कि फिलीस्तीन या दूसरी जगह के संघर्षों समेत पूरी दुनिया के लोगों के लिए लड़ाई लड़ी। बेशक, उसने अपने संघर्षों के कारण अपने देश में बहुत सारे दुश्मन बनाए, लेकिन उसका मानना था कि इन चुनौतियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। यह अस्मां के बारे में काफी कुछ बयान करता है।